HISTORY (H)
B.A. - III
PART - 'A'
PAPER - Vth
HISTORY OF INDIA (1550 - 1750)
UNIT VH. - Urban centries.
C. Urban social structure

नगरीय सामाजिक संरचना।

मुगल शहरों की एक दिलचस्प विशेषता यह थी कि सामाजिक वर्गों के आधार पर कोई भौतिक अलगाव नहीं था। गरीबों और अमीरों के निवास स्थान भी अलग-अलग नहीं थे। इसी प्रकार जाति या धर्म के आधार पर कोई भौतिक विभाजन नहीं था, यहाँ तक कि व्यवसायिक स्थान और आवासीय स्थान भी अलग - अलग नहीं था।

लेकिन उनके घर उनके जीवन स्तर के विशाल अंतर को दर्शाते हैं। आम लोगों के घर सामान्यतः मिट्टी के बने थे, जिनकी छतें फूस और बाँस की थी।

शहरों में बड़ी संख्या में मजदूर घूमंतु थे। जिस तीव्रता से भारतीय शहरों और कस्बों का निर्माण होता था और जिस तेजी से यहाँ से आबादी का पलायन होता था उसपर

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date:

बाबर ने भी ईरानी व्यक्ति की सूरत में विशाल अस्थायी आबादी थी। थिवनी और करेरी उल्लेख करते हैं कि लाल सागर और ईरान की ओर जाने वाले जहाजों में माल की लदाई के समय (जनवरी से मार्च) सूरत में जहाजों पर माल चढ़ाने के लिए मजदूरों की मांग बढ़ जाती थी और उस समय मजदूरों की संख्या में काफी वृद्धि हो जाती थी।

शहरों में ठगी का भी महौल था। बनारसी दास के अनुसार एक सर्राफ ने उसे नकली रुपये दे दिये। शहरों में लूट - पाट की घटनाएँ भी होती थी, यहाँ तक कि सबसे सुरक्षित शाहजहानाबाद जैसा शहर भी इससे सुरक्षित नहीं था।

आनंदराम मुखलिस का कहना है कि शाहजहानाबाद का एक कसाई खानान, मुहम्मद शाह के काल के दौरान शहर में कई चोरी और सेंधमारी की घटनाओं में शामिल था। इसी प्रकार पशुपालक गूजरों से भी त्रस्त था जो शहर के आसपास की बस्तियों में रहते थे।

→ मध्यम वर्ग :-

शहरी 'मध्यम वर्ग' की अवधारणा चौदहवीं शताब्दी में यूरोप में सामंती वर्ग के विरोध के रूप में उभरी। मध्यम वर्ग 'अभिजात्य और गुलाम' के बीच विद्यमान एक वर्ग के रूप में परिभाषित किया गया था। इस नए उभरते हुए वर्ग में केवल नए व्यापारी और व्यापारी समुदाय ही नहीं थे बल्कि नये पेशेवरों के वर्ग भी शामिल थे- वकील, चिकित्सक इत्यादि।

बर्नियर (1916-252) भारत भ्रमण पर आया तो इसने प्रसिद्ध टिप्पणी की कि दिल्ली में कोई मध्यम वर्ग नहीं है। यहाँ लोग या तो बहुत ही ऊँचे पद पर हैं या फिर बहुत ही गरीबी में जीने को मजबूर है। अकबर के शासनकाल में क्लर्कों और एकाउंटेंट्स जैसे पेशेवर वर्ग बड़ी संख्या में थे, लेकिन इनका अस्तित्व राज्य के अस्तित्व से जुड़ा हुआ था और इनका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं था। इस प्रकार ये पूरी तरह से राज्य पर आश्रित थे।

Page No.:
Date:

मोरलैंड ने (162-1748) ने हालांकि सहमति व्यक्त की है कि चिकित्सा, साहित्य, कला और संगीत जैसे कुछ व्यवसाय मौजूद थे। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह था कि उनके उत्पादों और सेवाओं के लिए बाजार काफी संकुचित था। शिक्षित मध्यम को बहुत कम था और चिकित्सक या कलाकार या साहित्यिक व्यक्ति केवल राज दरबार या प्रांतीय गवर्नरों जैसे शाही दरबार के तर्ज पर ही संगठित थे।

लेकिन मध्यकाल में असंख्य व्यवसायिक और सेवा वर्ग (व्यापारी, दुकानदार, चिकित्सक, वास्तुकार, शिक्षक, कवि, संगीतकार विद्वान आदि) मौजूद थी जिन्हे मध्यम वर्ग में वर्गीकृत किया जा सकता है। व्यापारियों, व्यवसाईयों और वाणिज्यिक वर्गों सर्राफ, महाजन। के स्वतंत्र वर्ग मौजूद थे, जो समृद्ध थे और समाज में उनका स्तर उच्च था। चिकित्सा सबसे समृद्ध व्यवसाय था। सिर्फ बड़े शहरों में ही

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date:

नहीं बल्कि सरहिंद, जौनपुर, खैराबाद, बनारस, कन्नौर और हिसार जैसे शहरों में भी पेशेवर चिकित्सकों के संदर्भ मिलते हैं, जहाँ पैसे से सेवाएँ प्राप्त की जा सकती थी।

शहरों में राज्यों व अमीरों द्वारा चलाए जाने वाले अस्पतालों (शिफाखानों) ने भी बड़ी संख्या में चिकित्सकों को रोजगार दिया, ऐसा ही एक शिफाखाना जहाँगीर द्वारा यात्रियों के लिए स्थापित किया गया था।

DR. UDAY KUMAR
DR. L.K.V.D. college Tajpur